1

530

Drishti Mentorship Programme (Mains)-2024

Essay

Name of Candidate: ARUN KUMAR		**Subject/Code:**	Essay-08
UPSC Roll No: 5417292		**Date:**	25/Aug/2024
Drishti Id: –		**E-mail Id:**	
Centre: – MN (Delhi)		**Medium:**	Hindi

Test Code: Essay-08

Time allowed: Three Hours

Maximum Marks: 250

(To be filled by Evaluator only)		
	Max. Marks	**Marks Obtained**
	(Essay Topic No.)	**(Marks)**
Section-A		
Section-B		
Total		
Overall Feedback		

INSTRUCTIONS

कृपया प्रश्नों का उत्तर देने से पहले निम्नलिखित निर्देशों को ध्यानपूर्वक पढ़ें:

- प्रवेश-पत्र में प्राधिकृत माध्यम में निबन्ध लिखना आवश्यक है तथा इस माध्यम का स्पष्ट उल्लेख प्रश्न-सह-उत्तर (क्यू. सी. ए.) पुस्तिका के मुखपृष्ठ पर निर्दिष्ट स्थान पर करना आवश्यक है। प्राधिकृत माध्यम के अलावा अन्य माध्यम में लिखे गए उत्तरों पर अंक नहीं दिए जाएँगे।
- प्रश्नों के उत्तर निर्दिष्ट शब्द-संख्या के अनुसार होने चाहिए।
- प्रश्न-सह-उत्तर पुस्तिका में खाली छोड़े गए किसी पृष्ठ अथवा पृष्ठ के भाग को पूर्णत: काट दीजिए।

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:

- The ESSAY must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly on the cover of this Question-cum-Answer (QCA) Booklet in the space provided. No marks will be given for answers written in a medium other than the authorized one.
- Word limit, as specified, should be adhered to.
- Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

For Student Only				
Time Taken	**Start Time:**	**End Time:**	**Student Signature**	
Mode of Examination	**Online**	**Offline**		

For Office Use Only				
Evaluators Code	**Evaluator Sign**	**Evaluation Date**	**Reviewers Code**	**Reviewers Sign**

Feedback				
Sr. No	मापदण्ड/Parameters	Max. Marks	Section-A (Essay-1)	Section-B (Essay-2)
1.	**परिचय:** विषय और संलग्रता की स्पष्टता। **Introduction:** Clarity of theme and engagement.	10		
2.	**विषय वस्तु:** प्रासंगिकता, विश्लेषण की गहराई और उदाहरणों/साक्ष्यों का उपयोग। **Content:** Relevance, depth of analysis, and use of examples/evidence.	25		
3.	**संरचना और संगठन:** तार्किक प्रवाह, पैराग्राफ संरेखण और विचारों की सुसंगतता। **Structure and Organization:** Logical flow, Paragraph alignment and Coherence of ideas.	20		
4.	**प्रासंगिकता:** विषय से विचलन की अनुपस्थिति, तर्क और पुष्टि/प्रमाणीकरण के बीच संतुलन **Relevance:** Absence of Deviation from Topic, Balance between argument and substantiation.	20		
5.	**भाषा और अभिव्यक्ति:** स्पष्टता, व्याकरण, वाक्यविन्यास, शब्दावली और अभिव्यक्ति **Language and Expression:** Clarity, Grammar, Syntax, Vocabulary and Articulation	20		
6.	**निष्कर्ष:** तर्कों और निष्कर्ष का प्रभावी सारांश। **Conclusion:** Effective summary of arguments and conclusion.	10		
7.	**मौलिकता और रचनात्मकता:** विचार और रचनात्मक अभिव्यक्ति में नवीनता। **Originality and Creativity:** Innovation in thought and creative expression.	20		
	कुल: Total:	125		

*** UPSC Requirement for Essay Paper:**

*Candidates may be required to write essays on multiple topics. They will be expected to keep **closely to the subject** of the essay to **arrange their ideas in orderly fashion** and to **write concisely.** Credit will be given for **effective and exact expression.***

*** निबंध पेपर के लिए यूपीएससी की अपेक्षा:**

*उम्मीदवार को एक विनिर्दिष्ट विषय पर निबंध लिखना होगा। विषयों के विकल्प दिये जायेंगे। उनसे आशा की जाती है कि अपने विचारों को निबंध के **विषय के निकट** रखते हुए **क्रमबद्ध** करें तथा **संक्षेप** में लिखें। **प्रभावशाली एवं सटीक अभिव्यक्तियों** के लिये श्रेय दिया जायेगा।*

Copyright – Drishti The Vision Foundation

निम्न खण्ड A व B प्रत्येक से एक विषय चुनकर दो निबन्ध लिखिए, जो प्रत्येक लगभग 1000-1200 शब्दों का हो :

Write two essays, choosing one topic from each of the following Sections A and B, in about 1000-1200 words each: (125 × 2 = 250)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

खंड-A/SECTION-A

Topic: "लोगों को उनके मानवाधिकारों से वंचित करना मानवता को चुनौती देना है।"

"सृष्टा से ने हमें अमोघ शक्तियों से नवाजा है, प्रकृति ने हमें स्वतंत्रताओं व अधिकारों से सींचा है, जो शासन, सत्ता, या दैवीयशक्ति हमारे अधिकारों से वंचित करे, ~~हमारा~~ हमारा यह नैतिक कर्तव्य है कि हमें उस सत्ता को उखाड़ फेंकना चाहिए।"

— अमेरिकी संविधान की प्रस्तावना (1789)

उपर्युक्त पंक्तियां हमारे निबंध के विषय को उद्घाटित करती हैं तथा मानवाधिकारों की महत्ता को स्वीकार करती हैं। मानवाधिकार, मानवजीवन को गरिमापूर्ण जीने के लिए प्रकृति द्वारा प्रत्येक को दिये गए उपहार हैं। किंतु अतीत से लेकर अब तक विभिन्न शक्तियां मानवाधिकारों पर अपनी शर्तें थोप कर उनको सीमित करने का प्रयास करती रही हैं।

641, 1st Floor, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi | 21, Pusa Road, Karol Bagh, New Delhi | 13/15 Tashkent Marg, Civil Lines, Prayagraj | 47/CC, Burlington Arcade Mall, Vidhan Sabha Marg, Lucknow | Plot No. 45& 45A, Harsh Tower-2, Main Tonk Road, Vasundhara Colony, Jaipur | 12, Main AB Road, Bhawar Kuan, Indore, Madhya Pradesh
drishti
Phone: 8750187501 :: e-mail: care@groupdrishti.in :: Website: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

मानवाधिकार एक बहुविषयी बहुआयामी शब्द है जो अपने आप में जीवन के प्रत्येक क्षेत्र को समेटे हुए है। सिर्फ मानव होने के नाते ही यह अधिकार हमें स्वत: ही प्राप्त हो जाते हैं इसके लिए हमें किसी से विशेष अनुग्रह नहीं करना पड़ता, नाही कोई विशेष भुगतान करना पड़ता है। किंतु सभ्यता के विकासक्रम में राजनीतिक - आर्थिक संरचनाओं ने इन अधिकारों का हनन किया व इन पर अंकुश लगाया है।

अब प्रश्न उठता है कि क्या मानवाधिकार सार्वभौमिक होते हैं या सापेक्ष होते हैं? या वस्तुनिष्ठ या आत्मनिष्ठ होते हैं इनकी प्रकृति कैसी होती होती है? इन पर अंकुश लगाने भर से मानवता को चुनौती मिलती है?

इन प्रश्नों का उत्तर देने के लिए हमे मानव अतीत के आयामों में झांकने की जरूरत है। इन आयामों का विश्लेषण करके हम माकूल उत्तरों तक पहुंच सकते हैं तथा मानवाधिकारों की उपयोगिता को उद्घाटित कर सकते हैं तथा उनको सुदृढ़ करने के उपाय कर सकते हैं।

641, 1st Floor, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi | 21, Pusa Road, Karol Bagh, New Delhi | 13/15 Tashkent Marg, Civil Lines, Prayagraj | 47/CC, Burlington Arcade Mall, Vidhan Sabha Marg, Lucknow | Plot No. 45& 45A, Harsh Tower-2, Main Tonk Road, Vasundhara Colony, Jaipur | 12, Main AB Road, Bhawar Kuan, Indore, Madhya Pradesh
drishti
Phone: 8750187501 :: e-mail: care@groupdrishti.in :: Website: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

प्रकृति ने मनुष्य को स्वतंत्रताओं से नवाजा है। उसे जीवन का अधिकार, स्वच्छंद जीवन जीने का अधिकार, प्रजनन का अधिकार, स्वतंत्र विचरण का अधिकार, अपनी अभिव्यक्तियों को व्यक्त करने के अधिकारों से नवाजा। मानवाधिकार अपनी प्रकृति के सार्वभौमिक होते हैं इनके आयामों की परीधि में स्वतंत्र अभिव्यक्ति, गरिमापूर्ण जीवन जीने, निजता का अधिकार, पर्यावरण का अधिकार, शासन, नेताओं को चुनने का अधिकार, आवास का अधिकार, संघ बनाने, अपना विरोध करने का अधिकार, शोषण के विरुद्ध अधिकार तथा शिक्षा स्वास्थ्य का अधिकार शामिल होते हैं।

~~संसाधनों की सीमितता~~

प्रकृति समय व देशकाल के हिसाब से इन अधिकारों की आत्मनिष्ठ तथा वस्तुनिष्ठ दोनों होती है। दुनियाभर के मानवाधिकार विद्वानों ने इनकी प्रकृति को सार्वभौमिक रूप में ही स्वीकार किया है, तथा मनुष्य होने के नाते प्रत्येक हेतु अनिवार्य माना है।

641, 1st Floor, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi | 21, Pusa Road, Karol Bagh, New Delhi | 13/15 Tashkent Marg, Civil Lines, Prayagraj | 47/CC, Burlington Arcade Mall, Vidhan Sabha Marg, Lucknow | Plot No. 45& 45A, Harsh Tower-2, Main Tonk Road, Vasundhara Colony, Jaipur | 12, Main AB Road, Bhawar Kuan, Indore, Madhya Pradesh

Phone: 8750187501 :: e-mail: care@groupdrishti.in :: Website: www.drishtiIAS.com

Copyright – Drishti The Vision Foundation

अतीत से शुरू हुई सभ्यता के विकास ने तथा संसाधनों की सीमितता ने दुनियाभर में संघर्ष को जन्म दिया तथा मानव के अधिकार व स्वतंत्रताओं पर अंकुश लगाया इसी संदर्भ में प्रबोधनयुगीन रूसो ने कहा था

"मनुष्य स्वतंत्र पैदा होता है किंतु वह सर्वत्र जंजीरों में जकड़ा रहता है"

यह अमानवीय जंजीरे हैं जो मानवीय अधिकारों पर अंकुश लगाती है तथा मानवता की क्षमताओं को सीमित करती है।

वैश्विक उदाहरणों में हम पुनर्जागरण युग में पोप तथा राजनीतिक सत्ता के गठजोड़ द्वारा मानवाधिकारों का हनन उनकी स्वतंत्रताओं पर सीमायें व अवधारणाऐं थोप देने के रूप में देख सकते है जिसने मानवता के चित्त को घायल किया।

मानवाधिकारों के हनन की एक कड़ी मध्यकालीन यूरोप में जाकर जुड़ती है। अटलांटिक-चार्टर व्यापार ने जिस तरह से दास व्यापार को बढ़ावा दिया वह देखते ही देखते मानवइतिहास को सबसे भयानक

Copyright – Drishti The Vision Foundation
उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

कुप्रथा बन गया। दासों का व्यापार मानव इतिहास का एक कलंक है जिसने संपूर्ण मानवता को शर्मिंदा किया, शोषणकर्ताओं ने लोगों के सामान्य जीवन के अधिकारों से उन्हे वंचित रखा।

मानवाधिकार हनन की एक अन्य भयावह प्रथा हमे हमारे अतीत में औपनिवेशिक साम्राज्यवादी प्रसार में देख सकते हैं। विकसित देशों ने व्यापार लाभ तथा सभ्यता के प्रसार के नाम पर स्थानीय व देशज लोगों की गुलामी का मार्ग प्रशस्त किया तथा वर्षों तक उन्हें शोषण के कुचक्र से दबाये रखा। ~~उदा~~

उदाहरण के लिए हम भारत में अंग्रेजी गुलामी की शोषणकारी प्रथाओं को देख सकते हैं। औपनिवेशिक कालीन भारत में भयंकर अकालों की बारम्बारता, ब्रिटिश सत्ता की अमानवीय नीतियों का ही परिणाम थी। दमन का कुचक्र जलियावाला बाग हत्याकांड में देख सकते है जब लोगों के विरोध करने के अधिकार को बंदूक की नोंक से दबाया गया।

एक अन्य उदाहरण हम अफ्रीकी गुलामी में देख सकते है जहां न सिर्फ लोगों को गुलाम बनाया गया, बल्कि रंगभेद व नस्लीय भेदभाव करके उन्हें जीवन में

641, 1st Floor, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi | 21, Pusa Road, Karol Bagh, New Delhi | 13/15 Tashkent Marg, Civil Lines, Prayagraj | 47/CC, Burlington Arcade Mall, Vidhan Sabha Marg, Lucknow | Plot No. 45& 45A, Harsh Tower-2, Main Tonk Road, Vasundhara Colony, Jaipur | 12, Main AB Road, Bhawar Kuan, Indore, Madhya Pradesh
Phone: 8750187501 :: e-mail: care@groupdrishti.in :: Website: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation
उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

- सामान्य मानवाधिकारों से भी वंचित रखा गया।

भारत में मानवाधिकारों के उल्लंघन का सबसे भयावह व शर्मनाक रूप जातिप्रथा, वर्णव्यवस्था से उपजी अस्पृश्यता के रूप में देखने को मिलता है कि किस तरह एक बड़े समूह को जीवन की अपमानताएं थोप कर उनकी स्वतंत्रताओं का हनन किया गया। इन स्वतंत्रताओं की सीमाओं का दुष्प्रभाव यह हुआ कि इन समूहों को मैतिक व शारीरिक रूप से अक्षम बना दिया। जिसने बाहरी आक्रमण, विदेशी कंपनियों के व्यापार, अंग्रेजी चुनौती के सम्मुख इन लोगों का साथ नहीं पाया जा सका।

अब हम उस सवाल का जवाब तलाशेंगे की मानवाधिकारों व संवैधानिक अधिकारों में कुछ अंतर है या समान है? दोनों क्यों जरूरी है? या सिर्फ एक ही जरूरी है?

उपरोक्त सवालों के जवाब हम मानवाधिकारों की प्राप्ति हेतु

Copyright – Drishti The Vision Foundation

लिये जाने वाले संघर्ष, राष्ट्रवादी आंदोलन तथा स्वतंत्रता व आजादी की लड़ाईयों में देखा जा सकता है।

दुनियाभर में मानवाधिकारों की प्राप्ति के लिए विभिन्न संघर्ष हुए हैं भारत में आजादी की लड़ाई अपनी स्वतंत्रताओं को पाने तथा अपने मानवाधिकारों का उपयोग करने हेतु ही हुई थी। दक्षिण अफ्रीका में रंगभेदी आंदोलन मानवाधिकारों की प्राप्ति हेतु ही हुए थे। स्वतंत्रता उपरांत वैश्विक स्तरों पर तथा अन्य देशों द्वारा राष्ट्रीय स्तरों पर मानव स्वतंत्रता व नागरिक अधिकारों को संविधान में वर्णित कर गारण्टीकृत किया गया था।

अब मानवाधिकार व संवैधानिक अधिकारों के बीच अंतरों को स्पष्ट किया जा सकता है अर्थात मानवाधिकार वे हैं जो सभी को मानव होने के नाते ही ~~प्राप्त~~ प्राप्त हो जाते हैं तथा संवैधानिक अधिकार वे हैं जिनकी प्राप्ति हेतु नागरिकों ने स्वतंत्रता की लड़ाईया लड़ी। यह अधिकार मुख्यत! नागरिकों को ही प्राप्त होते हैं संवैधानिक अधिकार भी मानवाधिकारों को ही दोहराते हैं जैसे कि भारतीय संविधान

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

-भी प्रस्तावना मे दोहराया गया है,

"हम भारत के लोग, भारत को — —
— — — — — —
— — तथा नागरिकों को सामाजिक
आर्थिक, राजनैतिक न्याय तथा विश्वास
विचार, अभिव्यक्ति, उपासना की स्वतंत्रता
— — — — —
— — — —"

(भारतीय संविधान प्रस्तावना)

उपरोक्त स्वतंत्रताएं ही मानवाधिकारों को पुष्ट करती हैं जैसे भारतीय संविधान में वर्णित मौलिक अधिकार - समता व समानता का अधिकार, स्वतंत्रता का अधिकार, शोषण के विरुद्ध अधिकार, धार्मिक विश्वास विचार का अधिकार शिक्षा व संस्कृति का अधिकार, अल्पसंख्यकों के अधिकार। आदि। अधिकारों की विस्तृत व्याख्या सार्वभौमिक मानवाधिकारों के चार्टर से प्रेरित है जो वंचितों, शोषितों व अल्पसंख्यकों के अधिकारों का भी संरक्षण करती है।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)
Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

अब इस सवाल का जवाब देने का प्रयास करते हैं जो निबन्ध के विषय से उपजता है कि मानवाधिकारों के हनन से मानवता को चुनौती कैसे ?

दरअसल इस सवाल का जवाब एक बहुआयामी विश्लेषण करके ही दिया जा सकता है अर्थात मानवाधिकारों का व्यापक हनन संपूर्ण मानवता तथा मानवीयप्रकृति पर सीमायें लगाता है

उदा० द्वितीय विश्वयुद्ध में हिटलर द्वारा की गई "होलोकास्ट" की कार्रवाई ने संपूर्ण मानवता को युद्ध की आग का निवाला बना दिया तथा यहूदी जाति के मानवों के जीवन के अधिकारों का हनन कर उनकी मृत्यु का मार्गप्रशस्त किया। किसी ने कहा भी है कि

"दमन की राहें मृत्यु तक ले जाती हैं।"

आधुनिक युग में होनेवाले युद्ध जैसे युक्रेन-रूस तथा इजराइल-हमास युद्धों ने व्यापक मानवक्षति की है। सामान्य जन, नागरिकों के अधिकारों का व्यापक उल्लंघन किया ~~गया~~ जा रहा है।

drishti
641, 1st Floor, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi | 21, Pusa Road, Karol Bagh, New Delhi | 13/15 Tashkent Marg, Civil Lines, Prayagraj | 47/CC, Burlington Arcade Mall, Vidhan Sabha Marg, Lucknow | Plot No. 45& 45A, Harsh Tower-2, Main Tonk Road, Vasundhara Colony, Jaipur | 12, Main AB Road, Bhawar Kuan, Indore, Madhya Pradesh
Phone: 8750187501 :: e-mail: care@groupdrishti.in :: Website: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

इज़राइल-हमास युद्ध में गैरसैनिक नागरिकों, अस्पतालों तथा शिक्षा केंद्रों को हमले का निशाना बनाया गया है अल जज़ीरा मीडिया नेटवर्क के मुताबिक अब तक हमास युद्ध में 5000 से ज्यादा बच्चों की मृत्यु हो चुकी है जो मासूमों के जीवन अधिकारों के व्यापक हनन को दर्शाती है वहीं इसरी और यूक्रेन-रूस युद्ध में जर्मनी के DW मीडिया नेटवर्क के मुताबिक कीव, ज़ेपोरोज़िया, खारकीव शहर तथा बुचा शहर में रूसी सेनाओं द्वारा, गैरसैन्य नागरिकों की हत्या, महिलाओं के साथ बलात्कार किये गए। रूसी सेना द्वारा किये गए युद्ध अपराध मानवाधिकारों की त्रासदी दर्शाने के साथ-साथ मानव की नैतिकता के पतन को दर्शाते हैं

लियो टॉलस्टाय ने अपनी ~~अपन~~ पुस्तक War and Peace में मानवाधिकारों की व्यापक पामालत की उनका कहना है

drishti
641, 1st Floor, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi | 21, Pusa Road, Karol Bagh, New Delhi | 13/15 Tashkent Marg, Civil Lines, Prayagraj | 47/CC, Burlington Arcade Mall, Vidhan Sabha Marg, Lucknow | Plot No. 45& 45A, Harsh Tower-2, Main Tonk Road, Vasundhara Colony, Jaipur | 12, Main AB Road, Bhawar Kuan, Indore, Madhya Pradesh
Phone: 8750187501 :: e-mail: care@groupdrishti.in :: Website: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

कि युद्ध के रूप में मानवाधिकारों का उल्लंघन "मानवजाति के रूप में हमारी बौद्धिक असफलता तथा नैतिक पतन को दर्शाता है।"

एक अन्य विद्वान "माइकलफ्रेरे" अपनी पुस्तक "~~Peg~~ Pedagogy of Oppressed" में शासन सत्ताओं द्वारा किये गए दमन प्रयासों तथा उनका मानव जीवन पर व्यापक प्रभाव दर्शाते हैं।

सरकारों द्वारा किये गए मानवाधिकार उल्लंघन तथा व्यक्तियों व दमनकारी ~~सत्ता~~ संस्थाओं के शोषणकारी चरित्र के खिलाफ बोलते हुए यूरोपियन साहित्यकार ने कहा था

"रौंद सकते हो तुम फूलों को ~~मगर~~
मगर ~~बहा~~रों का आना कब तक रोकोगे?"

दुनियाभर में मानवाधिकारों की बहाली को विभिन्न विद्वानों ने समय-समय पर अपनी विरोध प्रदर्शन की रणनीतियों तथा व्यापक ~~जनान्~~ जनशक्ति का इस्तेमाल करके अधिकारों की पुनर्बहाली का प्रयास किया।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

मानवाधिकारों की पुनर्बहाली को लेकर गांधी के सत्याग्रह, अनशन तथा असहयोग आंदोलन, भारतछोड़ो आंदोलन देखा जा सकता है वहीं रंगभेद की समाप्ति को लेकर नेल्सनमण्डेला का आंदोलन सराहनीय रहा।

अस्पृश्यता विरोधी आंदोलन का नेतृत्व का अम्बेडकर ने संवैधानिक उपायों से दमित, पीड़ित, वंचित समाजों के अधिकारों की पुष्टि की। वहीं मजदूरों के हितों व स्वतंत्रताओं को ध्यान में रखते हुए "कार्लमार्क्स ने अपनी कृति "दास कैपिटल" व कम्युनिस्ट मैनिफेस्टो से साम्यवाद का आदर्श देकर श्रमिक अधिकारों की वकालत की। साम्यवाद व समाजवाद के बढ़ते प्रसार का ही खतरा था कि पूंजीवाद ने अपनी रणनीति बदली तथा हितकारी पूंजीवाद से परोपकारी पूंजीवाद का दर्शन दिया।

मानवाधिकारों की सुरक्षा व संरक्षण हेतु दुनियाभर में व्यापक प्रयास किये गए हैं। मानवाधिकारों की सार्वभौमिक घोषणा,

641, 1st Floor, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi | 21, Pusa Road, Karol Bagh, New Delhi | 13/15 Tashkent Marg, Civil Lines, Prayagraj | 47/CC, Burlington Arcade Mall, Vidhan Sabha Marg, Lucknow | Plot No. 45& 45A, Harsh Tower-2, Main Tonk Road, Vasundhara Colony, Jaipur | 12, Main AB Road, Bhawar Kuan, Indore, Madhya Pradesh
Phone: 8750187501 :: e-mail: care@groupdrishti.in :: Website: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

को देशों द्वारा अपनाना, संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की स्थापना, तथा विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय पर्यावरणीय संस्थाओं व विकास संस्थाओं जैसे UNDP, WB, IMF मानवाधिकारों की सुरक्षा की दिशा में कार्य कर रही है। युद्ध अपराधों की रोकथाम हेतु अंतर्राष्ट्रीय कोर्ट ऑफ जस्टिस, इंटरनेशनल क्रिमिनल कोर्ट ऑफ जस्टिस सराहनीय कार्य कर रही हैं।

हालांकि हमें मानवाधिकारों की सुरक्षा हेतु व्यापक कदम उठाने होंगे, नागरिकों को सामाजिक सुरक्षा देकर तथा सा० आर्थिक सशक्तिकरण करना होगा, हरित वित्त की उपलब्धता कराकर जलवायु न्याय पर्यावरणीय समता को बढ़ावा देना होगा। आरक्षण जैसे विशेष प्रावधानों से कमजोर व वंचित समुदायों को सुरक्षा देनी होगी। अमानवीय प्रथाओं का उन्मूलन करना होगा तथा अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर युद्ध, हिंसा, शरणार्थी संकट रोकने हेतु व्यापक मानवीय नीतियां बनानी होंगी तथा राष्ट्रीय कानूनों में मानवाधिकार उल्लंघन करने वाले प्रावधानों को समाप्त करना होगा। इस तरह से हम शांतिपूर्ण मानवीय समाज की ओर बढ़ सकेंगे।

"हमें लोगों का सम्मान करना चाहिए इसलिए नहीं कि वे सम्मान के पात्र हैं बल्कि इसलिए हम मानवता के प्रतीक हैं"

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

Remarks for Essay-1

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

खंड-B/SECTION-B

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

Topic: "मनुष्य तब तक नए महासागरों की खोज नहीं कर सकता जब तक कि उसमें तट भूलने का साहस न हो।"

" जहाज अपने चारों ओर के पानी की वजह से नहीं डूबते हैं, वे डूबते हैं स्वयं में छिद्र होने, व स्थिर हो जाने पर."

उपरोक्त पंक्तियां मानव जीवन की गतिशीलता को रेखांकित करती हैं वे प्रकृति के शाश्वत नियम परिवर्तन को रेखांकित करती हैं, कि मनुष्य को अपनी गलतियों से चिपक बैठे नहीं रहना, बल्कि उनसे सबक लेते हुए आगे बढ़ना चाहिए तथा नए क्षितिजों को नए हिमशिखरों को, उगते सूरज को देखना चाहिए। अर्थात भूलों से आगे बढ़कर सफलता के मार्ग में नए आयामों को तलाशना चाहिए।

भारत के वैज्ञानिक संगठन ISRO द्वारा चन्द्रयान 03 की सफलता को नए क्षितिजों की खोज के रूप में देखा जा सकता है

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

ISRO द्वारा चन्द्रयान-2 की असफलता के बाद उसकी असफलता का शोक मनाने की बजाए उसने अपनी गलतियों को सुधारा। दिन-रात वैज्ञानिक शोध किये उसके द्वारा अपनी गलतियों की स्वीकारोक्ति के साहस ने ही उसे चन्द्रमा के दक्षिणतम बिंदु तक पहुंचाया। ISRO द्वारा चन्द्रयान 3.0 की सफल लैंडिंग न सिर्फ इसरो या भारत के लिए बल्कि संपूर्ण मानव जाति के लिए एक नवीन खोज के महासागर से अवगत कराया। (जो कि ISRO की प्रथम उपलब्धि है)

सफलता का राही अपनी धुन में चाहे कितनी भी बार गिरे, लेकिन वह पुनः पुनः साहस के साथ उठकर नए महासागरों, नवीन खोजों का उद्घाटन कर ही डालता है। विक्रम साराभाई तथा अब्दुल कलाम की जोड़ी

drishti
641, 1st Floor, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi | 21, Pusa Road, Karol Bagh, New Delhi | 13/15 Tashkent Marg, Civil Lines, Prayagraj | 47/CC, Burlington Arcade Mall, Vidhan Sabha Marg, Lucknow | Plot No. 45& 45A, Harsh Tower-2, Main Tonk Road, Vasundhara Colony, Jaipur | 12, Main AB Road, Bhawar Kuan, Indore, Madhya Pradesh
Phone: 8750187501 :: e-mail: care@groupdrishti.in :: Website: www.drishtiIAS.com

Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

विकास इंजन, पर प्रयोगों के दौरान कई बार असफल हुए किंतु उनकी भूलों को स्वीकारोक्ति के साहस तथा उनके नवाचारी व रचनात्मक उत्साही सोच ने विकास इंजन के निर्माण को सफल बनाया। विकास इंजन भारतीय वैज्ञानिक विकास कार्यक्रम के लिए नवीन महासागर सिद्ध हुआ इसी के दम पर भारत का अंतरिक्ष विकास सम्पन्न हुआ तथा रक्षा हेतु रॉकेट निर्माण, मिसाइलों का निर्माण भी संभव हो पाया।

वैश्विक स्तर पर भी हमें ऐसे कई उदाहरण देखने को मिलते हैं जिनके साहस ने धरती पर मानवजाति के जीवन को सदा के लिए परिवर्तित कर दिया। स्पेन की महारानी की दुनिया को खोजने की चुनौती को स्वीकार कर एक पुर्तगाली युवा "कोलम्बस" अपने जहाज से अपने देश के तटों को छोड़कर नवीन सागरों तथा ज्ञान व समृद्धि की चाहत लिए निकल पड़ा यात्रा पर। उसकी आत्मकथा The Four Voyages of Colombus में वर्णित है

drishti
641, 1st Floor, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi | 21, Pusa Road, Karol Bagh, New Delhi | 13/15 Tashkent Marg, Civil Lines, Prayagraj | 47/CC, Burlington Arcade Mall, Vidhan Sabha Marg, Lucknow | Plot No. 45& 45A, Harsh Tower-2, Main Tonk Road, Vasundhara Colony, Jaipur | 12, Main AB Road, Bhawar Kuan, Indore, Madhya Pradesh
Phone: 8750187501 :: e-mail: care@groupdrishti.in :: Website: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

प्रारंभ में उसे काफी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा उसके देश की पुर्तगाल सरकार ने उसे धन देने से मना कर दिया। किंतु धुन का पक्का कोलम्बस स्पेन की मदद से 'नई दुनिया' की खोज में निकला, जिसने अमेरिका की खोज कर डाली। उसकी खोजों ने मानवजाति को सदा के लिए बदल दिया।

ऐसा ही एक अन्य उदाहरण हमें "ग्रेगर जॉन मेण्डल" के रूप में देखने को मिलता है जो एक चर्च के पुजारी थे। उनके द्वारा मटर के पौधों पर किये गए अवलोकनों ने आनुवांशिकता के नए सिद्धांतों को उजागर किया तथा मानव जाति हेतु चिकित्सा ज्ञान के नए सागर नए क्षितिजों का द्वार खोला।

ग्रेगर के आनुवांशिकी मॉडल के ज्ञान के आधार पर ही आधुनिक Gene technology, Biotechnology,

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

Gene therapy, DNA recombinant Technology तथा Gene editing जैसी आनुवांशिकी चिकित्सा पद्धतियों का जन्म हुआ। अगर ग्रेगर मेण्डल अपनी पुरोहिताई के तट को पकड़े बैठे रहते तो शायद मानव जाति आनुवांशिकता के विज्ञान से वंचित रह जाती।

भारत में भी हमें अनेक उदाहरण देखने को मिलते हैं जिन्होंने अपनी भूलों के तट को छोड़ने का साहस किया। प्राचीन भारत में 'अशोक' को ले सकते हैं जिसने कलिंग युद्ध की भूल को स्वीकारने का साहस किया तथा विश्व के सामने धम्मघोष तथा प्रेम, करुणा, दया से शांतिपूर्ण विजय की नीति रखी। उनकी धम्म विजय ने मानव जाति के समक्ष कल्याणकारी राज्य की अवधारणा प्रस्तुत की।

वहीं आधुनिक भारत के राष्ट्रवाद के पिता अपनी पुस्तक 'हिंद स्वराज' में अपने बचपन की कई भूलों को स्वीकारते हैं तथा उनको सुधार कर आगे बढ़ते हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

राष्ट्रीय आंदोलन द्वारा उनके द्वारा अपनाई गई रणनीतियों की विफलता हुई तो उन्होंने बढ़ते असहयोग आंदोलन को वापस ले लिया उनके इस साहस ने उन्हें मानवतावादी आध्यात्मिक प्रिय संत के रूप में वर्णित किया। वे अपनी भूल को साहस के साथ स्वीकार कर आगे बढ़े उन्होंने भारतीय लोगों के चरित्र को ऊँचा उठाया उन्हें नैतिक साहस का बल दिया। भारत छोड़ो आंदोलन में उन्होंने इस जनशक्ति का प्रयोग किया। उनके साहस मानवजाति के सम्मुख, शोषण के विरोध का नया तरीका अहिंसा सत्याग्रह का आदर्श रखा। जिसको दुनियाभर में अपनाया गया)

ये गांधी के विरोध करने के नये सागर को खोजने का ही परिणाम था कि चाहे रंगभेद विरोधी आंदोलन हो, सिविलराइट मूवमेंट हो या दुनियाभर में चल रहे पर्यावरणीय आंदोलन हो सभी आंदोलनकर्ताओं ने सत्याग्रह अपनाया।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

व्यक्तियों के साहस के क्रम में अगला उदाहरण थॉमस एल्वा एडीसन का लिया जा सकता है जिसने अपनी विफलताओं के किनारे बैठकर शोक नहीं मनाया गया बल्कि अपने साहस, लगन व आगे बढ़ने की प्रेरणा से उसने ज्ञान के उस सागर को प्राप्त किया। जिसने अंधकार में डूबी मानवता को ~~कृत्रि~~ बल्ब के रूप में कृत्रिम सूर्य से परिचय कराया।

साहस की स्वीकारोक्ति के लिए एक भारतीय कवि ने लिखा था

"हार कर न बैठ मंज़िल के मुसाफिर
वो मंज़र भी आयेगा
जब प्यासे के पास चलकर
समुद्र भी आयेगा।"

कहने का अभिप्राय है कि जो निरंतर चलते रहते हैं वे देर सवेर ही सही सफलता के उस प्रकाश को देख ही लेते हैं जो असफलताओं पर शोक मनाने वाले कभी सोच भी नहीं सकते हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

वैश्विक स्तर संस्थाओं द्वारा अपने भूलों के तटों को छोड़कर उन समुद्रो को खोजने का प्रयास किया गया जिससे मानव जाति शांति व समृद्धता तथा स्थिरता की ओर बढ़ी। ~~प्रथम~~

प्रथम विश्वयुद्ध की भूलों से सीखकर विश्व ने संयुक्त राष्ट्र जैसे शांति संगठनों का विकास किया जिसने न केवल द्वितीय विश्वयुद्ध की समाप्ति में योगदान दिया बल्कि आज तक विभिन्न हिंसक घटनाओं के बाद भी मानवजाति को तृतीय विश्वयुद्ध की भयावता से बचाकर रखा।

वैश्विक संस्थाओं ने अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर नवीन संबन्धों को आकार दिया। वैश्वीकरण तथा तीव्र सांस्कृतिकरण की प्रक्रिया ने देशों को एक दूसरे के नज़दीक लाकर संबन्धों के ज्ञान के नवीन आयाम खोले।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

पर्यावरणीय संबन्ध, आर्थिक संबन्ध, कूटनीतिक संबन्ध, भूराजनीतिक, ऊर्जा, तथा तकनीकों के संबन्ध ने ही विश्व को सशान्त संघर्ष से बचने का ज्ञान उपलब्ध कराया है।

भारत को उदाहरण के तौर पर देख सकते हैं। भारत अपनी गुलामी से उपजी सामाजिक आर्थिक समस्याओं को पकड़कर नहीं बैठा रहा उसने अपना स्वयं का विस्तार किया तथा सही समय पर Liberlisation, Privatisation Globalisation (LPG) के सुधारों को लाकर वह न केवल खाद्यान्न में आत्मनिर्भर हुआ बल्कि वह विश्व की तीसरी बड़ी अर्थव्यवस्था बनकर उभरा। भारत की खाद्यान्न, भूखमरी तथा कुपोषण की समस्याओं ने उसे तट से नहीं पकड़ा बल्कि समस्याओं को स्वीकार करते हुए नवीन रास्तों की ओर प्रवृत्त किया। उसने हरित क्रांति को अपनाकर अपना पेट भरने के साथ-साथ विश्व को खाद्यान्न निर्यात किया तथा कई देशों के कृषि विकास में अपने ज्ञान का उपयोग किया। भारतीय कृषि विज्ञान का वैज्ञानिक ज्ञान संपूर्ण मानवजाति हेतु नवीन सागर के समान है।

drishti
641, 1st Floor, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi | 21, Pusa Road, Karol Bagh, New Delhi | 13/15 Tashkent Marg, Civil Lines, Prayagraj | 47/CC, Burlington Arcade Mall, Vidhan Sabha Marg, Lucknow | Plot No. 45& 45A, Harsh Tower-2, Main Tonk Road, Vasundhara Colony, Jaipur | 12, Main AB Road, Bhawar Kuan, Indore, Madhya Pradesh
Phone: 8750187501 :: e-mail: care@groupdrishti.in :: Website: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision | d

वैज्ञानिक व इतिहासकार युवाल नोवा हरारी अपनी पुस्तक The Sapeins में मानवजाति के वैज्ञानिक इतिहास की यात्रा का उल्लेख करते हैं। मानव ने अपने मस्तिष्क की क्षमताओं का विकास करके प्राकृतिक सीमाओं को लांघ दिया उसने आग, पहिये के आविष्कार से लेकर सूरज चांद सितारों की सैर हेतु उपग्रह, सैटेलाइट, दूरबीन बनाए। गहरे सागरों से लेकर चंद्रमा तक पर संचार हेतु उसने संचार तकनीकों का विकास किया। ~~आधुनिक~~

आधुनिक उभरती प्रौद्योगिकियों के विकास क्रम में इंसान ने Web 1.0 2.0 की गलतियों व सीमाओं को सुधारते हुए उसने Web 3.0, Web 4.0 जैसे इंटरनेट नेटवर्कों का विकास किया। कृत्रिम बुद्धिमत्ता तकनीकें, डिजिटल डिवाइस, इंटरनेट ऑफ थिंग्स, मेटावर्स, भूलों के तट को छोड़कर ज्ञान के नए महासागर बनकर उभरी हैं।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

संतान के निरंतर बढ़ने की गतिशीलता को भारतीय संगीतकार ने इस तरह पिरोया है

"नदिया चले चले रे धारा
सूरज चले, चले रे चंदा, चले सितारा
गोल है धरती, चले है जग सारा
तुझको चलना होगा, तुझको चलना होगा
जाके हर समुद्र से मिलना होगा।"

प्राकृतिक नियम भी हमें निरंतर गतिमान तथा परिवर्तन का ही इशारा देते हैं। ठहराव जीवन की विकास यात्रा को अवरुद्ध करता है तथा मानवीय साहस, धैर्य को विजीत कर उनकी सीमाओं को तय कर देता है जीवन की गाड़ी को चलाते रहना चाहिए, अपने साहस का परिचय देते रहना चाहिए जैसे भारतीय साहित्यकार का कथन है

"धाराएं विपरीत न हो तो नाविक की धैर्य परीक्षा क्या है
माना सागर की अपनी क्षमता है पर नाविक भी कब थमता है
अपने ही साहस से कर डाले उसने सातों सागर पार
लहरों की ही ओर घुमा दो नाविक निज पतवार।"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

अब सवाल उठता है कि क्या हमें अपनी गलतियों के तट पर रूककर थोड़ा सोचना चाहिए या निरंतर चलते रहना चाहिए?

इस प्रश्न का माकूल उत्तर देने से पहले हमें यह विचार करना होगा कि जिन समाजों व सभ्यताओं, देशों, संस्थाओं ने अपने तटों से चिपके रहने की भूल की उनका परिणाम क्या हुआ।

उदाहरण के तौर पर हम भारत के पड़ोसी देशों पाकिस्तान, बांग्लादेश, श्रीलंका, अफगानिस्तान को ले सकते हैं। इन राष्ट्रों ने अपनी साम्प्रदायिक व धार्मिक भूलों के तटों से चिपके रहने का कार्य किया, परिणाम स्वरूप यह राष्ट्र आज दुनिया में सर्वाधिक आतंकवाद हिंसा से पीड़ित हैं, तथा समय-समय पर होने वाले राजनैतिक तख्तापलटों ने इनके राजनैतिक-सामाजिक-आर्थिक विकास को तो अवरुद्ध किया ही है इनके ज्ञान व शोध की विकास प्रक्रिया भी अवरुद्ध हुई है।

अब हम यह स्पष्ट कर सकते हैं कि जीवन में ठहराव तो जरूरी है किंतु ज्यादा नहीं हमें अपनी गलतियों से

Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

सीखकर तुरंत आगे बढ़ जाना चाहिए। भूलों के शोक संताप में अपना व्यय करने की बजाए नवीन शोधों, नए विकल्पों पर अपना ध्यान लगाना चाहिए। क्योंकि भूलों की राहें मृत्यु तक जाती हैं।

निबंध के सारांश में यह कह सकते हैं कि मानवीय ज्ञान व जीवन की प्रगति प्रकृति के साथ कदम मिलाकर चलने में ही निरंतर आगे बढ़कर अपने विस्तार के साथ-साथ मानव जाति के विकास हेतु नए आयाम, नवीन खोजों के उद्घाटन में ही है।

"उस मार्ग का अनुसरण न करें जहां राहें ले जाए, बल्कि ऐसे मार्ग पर चलें जहां आप अपने ~~चि~~ निशां छोड़ आयें।"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

Remarks for Essay-2

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

Copyright – Drishti The Vision Foundation